नहीं देख पा रहे है तो क्लिक करें

# 'एक मुसलमान का कुचिपुड़ी सीखना चुनौती'

इंदु पांडेय
बीबीसी हिंदी डॉटकॉम के लिए

21 अगस्त 2015

साझा कीजिए

haleem khan

**हलीम ख़ान जब स्टेज पर परफ़ॉर्मेंस देने आते हैं तो कोई नहीं कह सकता कि महिला रूप में दरअसल एक आदमी है. हैदराबाद के रहने वाले हलीम ख़ान एक कुचिपुड़ी डांसर हैं.**

वह बताते हैं, "बचपन में डांस के प्रति लगाव को जब हमने अपने अम्मा और अप्पा को बताया तो उनका कहना था कि इसको हमारे यहाँ बुरा मानते हैं."

लेकिन बचपन से ही डांस के प्रति ऐसी दीवानगी रही कि माता-पिता के मना करने के बावजूद हलीम दो ट्यूशन के बीच में डांस सीखने जाते थे. यह सिलसिला आठ साल तक चलता रहा.

डांस में इस्तेमाल किए जाने वाले घुंघरू वह दोस्त के घर रखते थे, "इस बारे में तो ज़्यादातर दोस्तों को पता था न ही घर वालों को."

## 'पागल समझते थे'

haleem khan

बचपन में किसी को समझ नहीं आता था कि वह क्या कर रहे हैं.

इस बात को याद करते हुए हलीम कहते हैं, "सब समझते थे कि मैं पागल हूँ, किसी को बता नहीं पाया कि मैं क्या करता हूं. हिंदू देवी-देवताओं की कहानी पढ़ना और शिव की वंदना करना यह पहले सीखा है तब जाकर उसको आत्मसात किया है."

इसके लिए सबसे पहले खुद के साथ जिद करनी पड़ी, "हिंदू देवी-देवताओं की कहानी को मन से स्वीकार करना और इनकी कहानी पर सच्चे दिल से से विश्वास करना था. इसके लिए पहले खुद को मनाया."

## 'गुरु और माता-पिता'

haleem khan

इसके बाद बारी आई गुरु को मनाने की. कई चक्कर लगाने के बाद ही गुरु माने.

एक मुसलमान होते हुए कुचिपुड़ी सीखना एक चुनौती तो थी ही लेकिन मुश्किलें कई और थीं.

परिवार के ऐतराज़ों को दूर करना और उन्हें मनाना एक और चुनौती थी, जिससे उन्हें पार पाना था.

लेकिन अब उनके माता-पिता खुश हैं. अब वह जानते हैं कि हलीम एक कुचिपुड़ी डांसर हैं. आज हलीम भी गर्व से कहते हैं कि वह हिंदू कहानी जानते हैं.

## पाकिस्तान में परफ़ॉर्मेंस

haleem khan

पाकिस्तान जाने का मौका आया तो माँ बाप ने मना किया कि पाकिस्तान मत जाओ. लेकिन हलीम गए. लाहौर में उनकी परफ़ॉर्मेंस को लोगों की अच्छी प्रतिक्रिया मिली.

पाकिस्तान में कुचिपुड़ी डांस की कहानी उर्दू में कही गई.

हलीम ने अब तक 800 से जादा परफॉर्मेंस की हैं. उन्होंने कुचिपुड़ी डांस की डीवीडी बनाई, ताकि लोग डांस सीख सके. वह इस पर डॉक्यूमेंट्री भी बना रहे हैं.

haleem

उनकी की ख्वाहिश है कि वे दुनिया को बताएं कि डांस क्या है. वह हर भाषा में काम करना चाहते हैं, कहते हैं कि डांस को किसी भाषा या धर्म में बांधना ठीक नहीं है.

**(बीबीसी हिंदी का एंड्रॉयड मोबाइल ऐप डाउनलोड करने के लिए क्लिक करें. आप हमारे फ़ेसबुक पन्ने पर भी आ सकते हैं और ट्विटर पर फ़ॉलो भी कर सकते हैं.)**

## इस खबर को शेयर करें शेयरिंग के बारे में

सबसे ऊपर चलें

## संबंधित समाचार

**मथुरा ही नहीं मलेशिया वाले भी करते हैं रासलीला**
22 जून 2015

**बॉलीवुड में क्या कर रही हैं विदेशी महिलाएं?**
27 मार्च 2015

**खजुराहो में शास्त्रीय नृत्य का मेला**
25 फरवरी 2015

## अधिक भारत की खबरें